DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-4,
FOUNDATION OF GESTALT SCHOOL

LECTURE-32

FOUNDATION OF GESTALT SCHOOL

गेस्टाल्ट स्कूल की संस्थापना

सन् 1912 में जे ० बी ० वाटसन ने कोलंबिया विश्वविद्यालय में कई व्याख्यान दिए तथा जिसके परिणामस्परूप 1913 में व्यवहारवाद की औपचारिक स्थापना हुई ,मैक्स वर्दाइमर (MAX WERTHEIMER) ने आभासी गति पर किये गए कई प्रयोग का एक संयुक्त विश्लेषण प्रस्तुत किया ये प्रयोग वूल्फगैंग कोहलर (WULFGANG KOHLER) तथा कर्ट कौफ्का (KURTKOFFKA) के सहयोग से किया गया था |इन्ही सब प्रयोगों के आधार पर मैक्स वर्दाइमर द्वारा जिस सम्प्रदाय की स्थापना की गयी , उसे गेस्टाल्ट मनोविज्ञान कहा गया, जो मनोविज्ञान का एक

महत्वपूर्ण जर्मन स्कूल साबित हुआ |कोहलर तथा कौफ्का इस स्कूल के सहसंस्थापक माने गए |

अतः यहाँ तीनो मनोवैज्ञानिको के योगदान का वर्णन निम्नांकित है –

मैक्स वर्दाइमर(MAX WERTHEIMER 1880-1943)

मैक्स वर्दाइमर, का जन्म प्रेग(PRAGUE) में हुआ था | वे वहां कानून का अध्ययन किए |परन्तु फिर वे मनोविज्ञान में आ गए | वे कुल्पे के निर्देशन में वुर्जवर्ग विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त किये | वर्दाइमर की अभिरुची गति प्रत्यक्षण के अध्ययन में थी | उनके सामने समस्या यह थी कि ऐसे उद्दीपक जो वास्तव में गतिहीन है ,के प्रत्यक्षण को संवेदन का तत्व मानते हुए गति प्रत्यक्षण की व्याख्या किस तरह से की जा सकती है |कहानी इस प्रकार शुरू होती है कि वे छुट्टी के दिनों में रेलगाड़ी से वियाना से जर्मनी जा रहे थे | वे बीच में फ्रैंकफर्ट में ही रेलगाड़ी से उतर गए तथा रूककर एक नकली स्ट्रोवोस्कोप(TOYSTROBOSCOP) ख़रीदे | स्ट्रोवोस्कोप एक ऐसा यंत्र है जिसके सहारे स्थिर वस्तुओ को इस तरह वैकल्पिक रूप से अनावृत किया जाता है कि देखने वाला व्यक्ति को उसमे गति का अनुभव होता है | इस स्ट्रोवोस्कोप के सहारे वे कई

प्रेक्षण किये और अन्तोगत्वा इस निष्कर्ष पर पहुँचे की जो व्यक्ति प्रत्यक्षण करता है , उसका तालमेल पर्यावरण के हालातों या वस्तुओं से नहीं हो सकता है |गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की संस्थापना के पीछे इस विचार का महत्व सबसे अधिक रहा है |

आभासी गति की वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान करने के लिए वर्दाइमर ने कई प्रयोग किये | कोलहर तथा कौफ्का जिनकी आयु 23-24 साल की थी , उनके प्रयोगों में प्रयोज्य रहे | वे अपने एक आंशिक प्रयोग में टेचिस्टोस्कोप की खिड़की से दो विभिन्न लंब रेखा को अलग-अलग स्थान पर रख कर प्रयोज्य को दिखलाए |एक लम्ब रेखा को अलग-अलग स्थान पर रखकर प्रयोज्य को दिखलाए एक लम्ब रेखा को दायीं ओर तथा दूसरी लम्ब रेखा को बायीं ओर से दिखाया गया |प्रत्येक प्रयास में दोनों रेखाओं को वैकल्पिक ढंग से दिखाया गया तथा इन दोनों के बीच हल्का समय अंतराल दिया जाता था | तो प्रयोज्य ने गति का का प्रत्यक्षण नही किया तथा एक लम्ब रेखा को बायीं ओर तथा दूसरी लम्ब रेखा को दायीं ओर होते प्रत्यक्षण किया |

यह प्रत्यक्षण वास्तविक भौतिक उपस्थिति के समान था |परन्तु जब अनावरण समय एक सेकेंड से भी कम कर दिया गया तो,

प्रयोज्य धीरे –धीरे दो लम्ब रेखा का प्रत्यक्षण न करके एक ही लम्ब रेखा को एक तरफ से निकालकर दूसरी तरफ जाते प्रत्यक्षण किया |एक सेकेंड के 15 वें भाग तक प्रयोज्य ने इस तरह की गति प्रत्यक्षण का अनुभव किया | जब अनावरण समय इससे भी कम जैसे 1/30 वें सेकेंड हो गया तो फिर आभासी गति का प्रत्यक्षण समाप्त हो गया और प्रयोज्य ने दो अलग –अलग स्थिर रेखाओं का प्रत्यक्षण किया |वर्दाइमर ने अन्य कई प्रयोग किय और स्पष्टत :पाये कि आभासी गति का प्रत्यक्षण तभी होता है जब दो दृष्टि उद्दीपको के बीच एक उचित समय अंतराल हो |ऐसे प्रयोगों के परिणाम 1912 में प्रकाशित किये गए था वर्दाइमर ने आभासी गति के भ्रम को एक तकनीकी नाम दिया जिसे फाई घटना कहा गया |

वर्दाइमर की मृत्यु 1943 में हो गयी |उनके मृत्यु के दो साल बाद उनकी पुस्तक 'प्रोडक्टिव थिंकिंग' का प्रकाशन हुआ | यह पुस्तक अपने समय में एक बहुचर्चित पाठ्य –पुस्तक के रूप में चर्चित हुयी |

वुल्फगैंग कोहलर

(wolfgang कोहलर 1887-1967)

कोहलर का जन्म 1887 में इस्टोमिया में हुआ तथा 1909 में वे स्टम्फ के निर्देशन में बर्लिन विश्वविद्यालय से पि-एच०डी की उपाधि प्राप्त की |वे मैक्स प्लांक से भौतकी भी पढ़े थे तथा ध्वानिकी का भी अध्ययन किये थे | उनका डाक्टरीय शोध प्रबंध मनो ध्वनकी के क्षेत्र में था |डाक्टरीय उपाधि प्राप्त करने के बाद कोहलर फ्रैंकफर्ट चले गए जहाँ उनकी मुलाक़ात वर्दाइमर से हुई | 1913 में वे फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय छोड़कर टेनेराईफ द्वीप चले गए जहाँ वे बंदरो एवं वनमानुष का अध्ययन गंभीरता से किये | वे वनमानुष तथा मुर्गी के बच्चों में दृष्टि विभेदन का अध्ययन किये |कोहलर के अनुसार उद्दीपको के बीच के सम्बन्ध का प्रत्यक्षण पशुओं की ज्ञान का द्योतक है और ऐसे संबंधो के अचानक प्रत्यक्षण को उन्होंने सूझ (insight) की संज्ञा दी है | वनमानुष जिसने यह प्रत्यक्षण किया की दो छड़ी को जब आपस में जोर दिया जाता ,तो वह बाहर रखे केले को आसानी से प्राप्त कर ले सकता है |एक महत्वपूर्ण व्यवहार का नमूना है कोहलर द्वारा लिखित पुस्तक ‘ दी मेंटलिटी ऑफ़ ऐप्स में इसके बारे में अच्छा वर्णन मिलता है |

कोहलर 1922 में बर्लिन विश्वविद्यालय में प्राचार्य के पद पर नियुक्त हुए | वर्दाइमर भी बर्लिन विश्वविद्यालय लौट आये थे | इस तरह कोहलर , वर्दाइमर तथा कौफ्का तीनों मिलकर एक

जनरल का प्रकाशन किया ,जिसका नाम 'psychologische frolchung' था जो प्रयोगात्मक शोधों तथा गति के सिद्धांतों का एक प्रमुख साधन था | इस तरह से वर्दाइमर , कोहलर तथा कौफ्का तीनो आपस में मिलकर बिना किसी तरह के मतभेद से कार्य करते रहे |

कर्ट कौफ्का

(kurt koffka ,1887 – 1941)

कौफ्का का जन्म बर्लिन में हुआ था तथा बर्लिन विश्वविद्यालय से 1909 में पि॰एच॰डी की उपाधि स्टम्फ़ के निर्देशन में प्राप्त किये | उनका डाक्टरीय शोध प्रबंध लय पर था | वे 1910 में फ्रैंकफर्ट आये तथा उनका संपर्क कोहलर एवं वर्दाइमर से बढ़ा| 1911 में वे जिसने जो फ्रैंकफर्ट से करीब चालीस मील की दुरी पर था में डोजेंट (dozent) नियुक्त हुए | इस दूरी के बाबजूद , कौफ्का का सम्बन्ध वर्दाइमर तथा कोहलर से अच्छा बना रहा | कौफ्का 1927 तक गिसेन विश्वविद्यालय में बने रहे | जर्मनी में कौफ्का कोहलर तथा वर्दाइमर द्वारा प्रारंभ किये गए नए मनोवैज्ञानिक की पहचान कुछ अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी की गयी | अतः वे लोग इस मनोविज्ञान के सारांश प्राप्त करने की उत्सुकता व्यक्त किये | परिणामस्वरूप , कौफ्का को

प्रकाशित 'साइकोलॉजिकल बुलेटिन' के लिए लिखने के लिए कहा | इस आग्रह के अनुरूप 1922 में कौफ्का ने एक शोध पत्र लिखा जिसका शीर्षक था – 'परसेप्सन : इन इंट्रोडक्शन टू गेस्टाल्ट थियोरी'(perception:an introduction to gestalt theory) इस शोध पत्र में इन तीनो मनोवैज्ञानिको अर्थात कोहलर ,कौफ्का तथा वर्दाइमर द्वारा किये गए प्रयोगों का वर्णन था | 1921 में वे डेवेलपमेंट चाइल्ड साइकोलॉजी प्रकाशन किया जिसे बाद में ' दी ग्रोथ ऑफ दी माइंड' शीर्षक के तहत अनुवाद किया गया | 1927 में स्मिथ कॉलेज के मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किये गए जहाँ वे मृत्यु तक यथार्थ 1941 तक इस पद पर बने रहे |